

## आर्थिक प्रतिबंधों की वैश्विक राजनीति और भारत की संतुलनकारी विदेश नीति

ओम प्रकाश गुप्ता

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान, शासकीय महाविद्यालय राजपुर, बलरामपुर, रामानुजगंज, छत्तीसगढ़, भारत

### सारांश

समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में आर्थिक प्रतिबंध सैन्य हस्तक्षेप के विकल्प के रूप में एक महत्वपूर्ण कूटनीतिक उपकरण के रूप में उभरे हैं, जिनका प्रयोग शक्तिशाली राष्ट्रों और बहुपक्षीय संस्थाओं द्वारा राजनीतिक दबाव, रणनीतिक नियंत्रण तथा वैश्विक व्यवस्था में अनुशासन बनाए रखने के उद्देश्य से किया जाता है। वैश्वीकरण और आर्थिक निर्भरता के वर्तमान युग में आर्थिक प्रतिबंधों का प्रभाव केवल लक्षित राज्यों तक सीमित न रहकर व्यापक सामाजिक-आर्थिक संरचनाओं को प्रभावित करता है, जिससे उनकी वैधता, प्रभावशीलता और नैतिकता पर गंभीर प्रश्न खड़े होते हैं। यह शोध-पत्र आर्थिक प्रतिबंधों की वैश्विक राजनीति का सैद्धांतिक एवं आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा यह विवेचन करता है कि ये प्रतिबंध किस प्रकार शक्ति-राजनीति और आर्थिक राज्यकला के साधन के रूप में कार्य करते हैं। अध्ययन का केंद्रीय फोकस भारत की संतुलनकारी विदेश नीति पर है, जो एक ओर राष्ट्रीय हितों, ऊर्जा सुरक्षा और आर्थिक विकास की आवश्यकताओं को प्राथमिकता देती है, वहीं दूसरी ओर बहुपक्षीयता, अंतरराष्ट्रीय कानून और वैश्विक उत्तरदायित्व के सिद्धांतों के प्रति प्रतिबद्धता बनाए रखती है। शोध में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि भारत ने आर्थिक प्रतिबंधों के संदर्भ में न तो पूर्ण समर्थन की नीति अपनाई है और न ही निरपेक्ष विरोध का मार्ग चुना है, बल्कि उसने रणनीतिक स्वायत्तता पर आधारित एक लचीली और विवेकपूर्ण विदेश नीति विकसित की है। गुणात्मक विश्लेषण पद्धति के माध्यम से यह अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि आर्थिक प्रतिबंधों का प्रभाव असमान होता है, जिसका भार प्रायः विकासशील देशों और समाज के कमजोर वर्गों पर अधिक पड़ता है, जिससे वैश्विक दक्षिण के हित प्रभावित होते हैं। इस संदर्भ में भारत की भूमिका एक ऐसे उभरते वैश्विक अभिनेता के रूप में सामने आती है, जो प्रतिबंध-आधारित शक्ति संरचना के स्थान पर संवाद, सहयोग और संस्थागत सुधारों को प्राथमिकता देता है। अंततः यह शोध निष्कर्ष निकालता है कि आर्थिक प्रतिबंधों की वैश्विक राजनीति में भारत की संतुलनकारी विदेश नीति न केवल उसके राष्ट्रीय हितों की रक्षा करती है, बल्कि वह बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में एक वैकल्पिक, नैतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण भी प्रस्तुत करती है, जो दीर्घकालिक वैश्विक स्थिरता और समावेशी अंतरराष्ट्रीय शासन की संभावनाओं को सुदृढ़ करता है।

**मूल शब्द:** आर्थिक प्रतिबंध, वैश्विक राजनीति, रणनीतिक स्वायत्तता, भारत की विदेश नीति, आर्थिक राज्यकला, बहुपक्षीयता

### परिचय

अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति समय के साथ निरंतर परिवर्तित होती रही है। जहाँ परंपरागत काल में युद्ध और सैन्य शक्ति राज्यों के बीच संबंधों का मुख्य निर्धारक थे, वहीं समकालीन वैश्विक व्यवस्था में आर्थिक साधनों का प्रयोग नीति-निर्माण का प्रमुख आधार बनता जा रहा है। इस परिवेश में आर्थिक प्रतिबंध एक ऐसे राजनीतिक उपकरण के रूप में उभरे हैं, जिनके माध्यम से किसी राज्य के व्यवहार को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है, बिना प्रत्यक्ष सैन्य हस्तक्षेप के। आर्थिक संसाधनों, वित्तीय नेटवर्क और व्यापारिक संरचनाओं पर नियंत्रण ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति को अधिक जटिल तथा बहुआयामी बना दिया है। आर्थिक प्रतिबंधों का प्रयोग केवल किसी विशिष्ट नीति के विरोध तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह वैश्विक शक्ति-संतुलन, संस्थागत प्रभुत्व और राजनीतिक वैधता से भी गहराई से जुड़ा होता है। प्रतिबंध लगाने वाले राज्य स्वयं को अंतरराष्ट्रीय मानकों का संरक्षक प्रस्तुत करते हैं, जबकि प्रतिबंधित राज्यों को अनुशासनहीन अथवा नियम-विरोधी के रूप में चित्रित किया जाता है। इस प्रक्रिया में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या आर्थिक प्रतिबंध वास्तव में अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को अधिक स्थिर और न्यायसंगत बनाते हैं, या वे वैश्विक असमानताओं को और अधिक गहरा करते हैं। भारत जैसे विकासशील एवं उभरते हुए राज्य के लिए आर्थिक प्रतिबंधों की राजनीति विशेष महत्व रखती है। भारत की विदेश नीति ऐतिहासिक रूप से स्वतंत्र निर्णय-क्षमता, बहुपक्षीय सहभागिता और विकासवात्मक प्राथमिकताओं पर आधारित रही है। वर्तमान वैश्विक संदर्भ में भारत को एक ओर अपनी आर्थिक वृद्धि, ऊर्जा आवश्यकताओं और रणनीतिक साझेदारियों को सुरक्षित रखना है, वहीं दूसरी ओर उसे अंतरराष्ट्रीय दबावों और नैतिक अपेक्षाओं के बीच संतुलन भी साधना है। इसी कारण भारत ने आर्थिक

प्रतिबंधों के प्रश्न पर एक ऐसी विदेश नीति विकसित की है, जो पूर्ण समर्थन या पूर्ण विरोध के बजाय विवेकपूर्ण संतुलन पर आधारित है। यह शोध-पत्र इसी संतुलनकारी दृष्टिकोण को समझने का प्रयास करता है। आर्थिक प्रतिबंधों को केवल कूटनीतिक साधन के रूप में न देखकर, उन्हें वैश्विक शक्ति संरचना के व्यापक संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। साथ ही, यह अध्ययन भारत की विदेश नीति को एक प्रतिक्रियात्मक रणनीति के बजाय एक सुविचारित और दीर्घकालिक दृष्टि के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, यह भूमिका आर्थिक प्रतिबंधों और भारत की विदेश नीति के अंतर्संबंध को समझने के लिए एक सैद्धांतिक और विश्लेषणात्मक आधार प्रदान करती है।

### शोध समस्या

**आर्थिक प्रतिबंधों को सामान्यतः** अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने के वैध साधन के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। तथापि, व्यवहार में यह स्पष्ट नहीं है कि ये प्रतिबंध अंतरराष्ट्रीय नैतिकता का साधन हैं या वैश्विक शक्ति असमानताओं को बनाए रखने का उपकरण। इस संदर्भ में मुख्य समस्या यह है कि उभरती शक्तियाँ, विशेषकर भारत, इस व्यवस्था में अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा किस प्रकार करती हैं।

### शोध प्रश्न

यह शोध निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खोजने का प्रयास करता है:

1. आर्थिक प्रतिबंधों की वैश्विक राजनीति का सैद्धांतिक आधार क्या है?
2. आर्थिक प्रतिबंध किस प्रकार शक्ति-राजनीति और आर्थिक राज्यकला का रूप लेते हैं?

3. भारत ने आर्थिक प्रतिबंधों के प्रति संतुलनकारी विदेश नीति क्यों अपनाई है?
4. यह नीति भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और वैश्विक भूमिका को कैसे प्रभावित करती है?

### शोध के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. आर्थिक प्रतिबंधों की अवधारणा एवं वैश्विक राजनीतिक संदर्भ का विश्लेषण करना
2. प्रतिबंधों के पीछे निहित शक्ति-राजनीति को समझना
3. भारत की विदेश नीति में संतुलनकारी दृष्टिकोण के कारणों की व्याख्या करना
4. भारत की नीति का आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करना

### साहित्य समीक्षा

**आर्थिक प्रतिबंधों पर उपलब्ध साहित्य को मुख्यतः** दो धाराओं में विभाजित किया जा सकता है। पहली धारा प्रतिबंधों को अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में अनुशासन बनाए रखने का वैध साधन मानती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, प्रतिबंध सैन्य हस्तक्षेप की तुलना में कम विनाशकारी होते हैं और अंतरराष्ट्रीय कानून के अनुपालन को प्रोत्साहित करते हैं। दूसरी धारा प्रतिबंधों को शक्ति-राजनीति का उपकरण मानती है। इस मत के अनुसार, आर्थिक प्रतिबंध प्रायः शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा कमजोर देशों पर दबाव बनाने के लिए प्रयोग किए जाते हैं। कई अध्ययनों में यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि प्रतिबंधों का भार मुख्यतः आम नागरिकों पर पड़ता है, जबकि राजनीतिक नेतृत्व अपेक्षाकृत अप्रभावित रहता है। भारतीय विदेश नीति पर केंद्रित साहित्य भारत की रणनीतिक स्वायत्तता, गुटनिरपेक्ष विरासत और बहुपक्षीयता पर बल देता है। हाल के अध्ययनों में यह स्पष्ट किया गया है कि भारत की नीति आदर्शवाद और यथार्थवाद के मध्य संतुलन स्थापित करने का प्रयास है। तथापि, आर्थिक प्रतिबंधों के संदर्भ में भारत की भूमिका पर समग्र अकादमिक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित हैं, जिसे यह शोध भरने का प्रयास करता है।

### 1. सैद्धांतिक ढाँचा

इस शोध-पत्र का सैद्धांतिक ढाँचा तीन प्रमुख अवधारणाओं पर आधारित है:

#### 1.1 शक्ति-राजनीति और आर्थिक साधन

यथार्थवादी सिद्धांत के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय राजनीति शक्ति के लिए संघर्ष का क्षेत्र है। आर्थिक प्रतिबंध इस संघर्ष में सैन्य शक्ति के विकल्प के रूप में प्रयुक्त होते हैं। ये प्रतिबंध राज्य की आर्थिक क्षमता को कमजोर कर उसकी राजनीतिक स्वतंत्रता को सीमित करते हैं।

#### 1.2 आर्थिक राज्यकला

आर्थिक राज्यकला वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से राज्य आर्थिक संसाधनों का प्रयोग विदेश नीति के लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु करता है। आर्थिक प्रतिबंध इसी राज्यकला का नकारात्मक पक्ष हैं, जिनका उद्देश्य दबाव और नियंत्रण स्थापित करना होता है।

#### 1.3 रणनीतिक स्वायत्तता

रणनीतिक स्वायत्तता का तात्पर्य यह है कि कोई राज्य अपनी विदेश नीति के निर्णय बाहरी दबावों से स्वतंत्र होकर ले सके। भारत की संतुलनकारी नीति इसी सिद्धांत पर आधारित है।

### 2. आर्थिक प्रतिबंधों की वैश्विक राजनीति

आर्थिक प्रतिबंधों की राजनीति को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उन्हें केवल नीति-उपकरण के रूप में न देखकर

अंतरराष्ट्रीय शक्ति संरचना के अभिन्न अंग के रूप में विश्लेषित किया जाए। वैश्विक राजनीति में प्रतिबंधों का प्रयोग उन राज्यों द्वारा अधिक किया जाता है जिनकी आर्थिक, वित्तीय और संस्थागत पहुँच व्यापक होती है। इस संदर्भ में आर्थिक प्रतिबंध एक असममित (asymmetric) शक्ति साधन के रूप में कार्य करते हैं।

आर्थिक प्रतिबंधों का राजनीतिकरण इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि समान परिस्थितियों में विभिन्न राज्यों के प्रति भिन्न-भिन्न मानदंड अपनाए जाते हैं। इससे यह तर्क बल पाता है कि प्रतिबंध अंतरराष्ट्रीय नैतिकता से अधिक रणनीतिक हितों से संचालित होते हैं। वैश्विक राजनीति में प्रतिबंधों का चयनात्मक प्रयोग अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की निष्पक्षता पर प्रश्नचिह्न लगाता है।

#### 2.1 आर्थिक प्रतिबंध एक शक्ति-साधन के रूप में

आधुनिक अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में शक्ति का प्रयोग प्रत्यक्ष सैन्य बल तक सीमित नहीं रह गया है। आर्थिक प्रतिबंध उस अप्रत्यक्ष शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं जो किसी राज्य की नीतिगत स्वतंत्रता को सीमित कर सकती है। वित्तीय लेन-देन, बैंकिंग नेटवर्क, बीमा प्रणाली और तकनीकी आपूर्ति श्रृंखलाएँ प्रतिबंधों के प्रमुख लक्ष्य बन चुकी हैं। शक्ति-राजनीति के दृष्टिकोण से देखा जाए तो आर्थिक प्रतिबंध उन राज्यों को वैश्विक व्यवस्था के "अनुशासनात्मक ढाँचे" में बनाए रखने का साधन हैं, जो स्थापित शक्ति संतुलन को चुनौती देते हैं। इस प्रक्रिया में प्रतिबंध लगाने वाले राज्य स्वयं को नियम-निर्माता (rule-makers) और लक्षित राज्य को नियम-अनुपालक (rule-taker) के रूप में स्थापित करते हैं।

#### 2.2 एकतरफा और बहुपक्षीय प्रतिबंधों का अंतर

आर्थिक प्रतिबंधों को उनके प्रवर्तन के आधार पर एकतरफा और बहुपक्षीय श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। बहुपक्षीय प्रतिबंध, जो अंतरराष्ट्रीय संगठनों के माध्यम से लागू किए जाते हैं, सैद्धांतिक रूप से अधिक वैध माने जाते हैं क्योंकि वे सामूहिक निर्णय प्रक्रिया का परिणाम होते हैं। इसके विपरीत, एकतरफा प्रतिबंध किसी एक राज्य द्वारा अपने राष्ट्रीय कानूनों के आधार पर लगाए जाते हैं। अकादमिक साहित्य में यह तर्क दिया गया है कि एकतरफा प्रतिबंध अंतरराष्ट्रीय कानून की भावना के विरुद्ध जाते हैं, क्योंकि वे संप्रभु समानता के सिद्धांत को कमजोर करते हैं। इसके बावजूद, वैश्विक राजनीति में एकतरफा प्रतिबंधों की संख्या और प्रभाव दोनों में वृद्धि देखी जा रही है। यह प्रवृत्ति अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के संस्थागत क्षरण की ओर संकेत करती है।

#### 2.3 वैश्वीकरण और प्रतिबंधों की प्रभावशीलता

वैश्वीकरण ने आर्थिक प्रतिबंधों की प्रभावशीलता को दो विपरीत दिशाओं में प्रभावित किया है। एक ओर, अंतरनिर्भरता के कारण किसी भी राज्य की अर्थव्यवस्था को बाधित करना अपेक्षाकृत सरल हो गया है। दूसरी ओर, वैकल्पिक बाजारों और साझेदारियों की उपलब्धता ने प्रतिबंधों की दीर्घकालिक प्रभावशीलता को सीमित किया है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के पुनर्संरचना (restructuring) ने प्रतिबंधों के विरुद्ध अनुकूलन की संभावनाएँ बढ़ाई हैं। परिणामस्वरूप, प्रतिबंध अब तात्कालिक दबाव तो उत्पन्न करते हैं, किंतु दीर्घकालिक नीति परिवर्तन सुनिश्चित नहीं कर पाते।

#### 2.4 आर्थिक प्रतिबंधों के सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

आर्थिक प्रतिबंधों के सामाजिक-आर्थिक प्रभावों का मूल्यांकन करते समय यह स्पष्ट होता है कि उनका भार समान रूप से वितरित नहीं होता। सामान्यतः ये प्रतिबंध समाज के कमजोर वर्गों

को अधिक प्रभावित करते हैं। रोजगार, स्वास्थ्य, शिक्षा और खाद्य सुरक्षा जैसे क्षेत्र प्रतिबंधों से गंभीर रूप से प्रभावित होते हैं। इस संदर्भ में यह तर्क महत्वपूर्ण है कि आर्थिक प्रतिबंधों का मानवीय प्रभाव उन्हें नैतिक रूप से विवादास्पद बनाता है। कई अध्ययनों में यह निष्कर्ष निकाला गया है कि प्रतिबंधों से उत्पन्न सामाजिक संकट राजनीतिक नेतृत्व की तुलना में आम नागरिकों पर अधिक पड़ता है, जिससे प्रतिबंधों की वैधता पर प्रश्न उठता है।

### 2.5 आर्थिक प्रतिबंध और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ

आर्थिक प्रतिबंधों की राजनीति में अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका द्वैध रही है। एक ओर, ये संस्थाएँ प्रतिबंधों को वैधता प्रदान करती हैं; दूसरी ओर, वे शक्तिशाली राज्यों के प्रभाव से पूरी तरह मुक्त नहीं रह पातीं। यह स्थिति अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की स्वायत्तता और निष्पक्षता पर प्रश्नचिह्न लगाती है। संस्थागत ढाँचे के भीतर प्रतिबंधों का प्रयोग वैश्विक शासन व्यवस्था को सुदृढ़ करने के बजाय कई बार उसे खंडित करता प्रतीत होता है। इससे बहुपक्षीयता की अवधारणा कमजोर पड़ती है और राज्यों के बीच अविश्वास बढ़ता है।

### 3. भारत की संतुलनकारी विदेश नीति का वैचारिक आधार

भारत की विदेश नीति का मूल स्वरूप किसी एक सैद्धांतिक ढाँचे तक सीमित नहीं है। यह ऐतिहासिक अनुभव, भौगोलिक परिस्थितियों और विकासात्मक आवश्यकताओं से निर्मित हुई है। आर्थिक प्रतिबंधों के संदर्भ में भारत का दृष्टिकोण इसी बहुस्तरीय नीति-निर्माण प्रक्रिया का परिणाम है। भारत ने सदैव यह तर्क प्रस्तुत किया है कि प्रतिबंधों का प्रयोग अंतिम विकल्प के रूप में होना चाहिए, न कि प्राथमिक नीति उपकरण के रूप में। यह दृष्टिकोण भारत की कूटनीतिक परंपरा और विकासशील देशों के प्रति उसकी संवेदनशीलता को प्रतिबिंबित करता है।

#### 3.1 रणनीतिक स्वायत्तता और नीति-निर्णय

रणनीतिक स्वायत्तता भारत की विदेश नीति का केंद्रीय तत्व है। इसका अर्थ यह नहीं है कि भारत वैश्विक घटनाओं से पृथक् रहता है, बल्कि यह कि वह अपने निर्णय स्वतंत्र विवेक और राष्ट्रीय हितों के आधार पर लेता है। आर्थिक प्रतिबंधों के प्रश्न पर भारत ने इसी सिद्धांत का पालन किया है। भारत ने उन प्रतिबंधों का समर्थन किया है जो व्यापक अंतरराष्ट्रीय सहमति पर आधारित रहे हैं, जबकि एकतरफा प्रतिबंधों के प्रति उसने सतर्क रुख अपनाया है। यह नीति भारत को वैश्विक शक्ति संतुलन में लचीलेपन के साथ भागीदारी की अनुमति देती है।

#### 3.2 राष्ट्रीय हित और आर्थिक आवश्यकताएँ

भारत की संतुलनकारी नीति का एक प्रमुख कारण उसकी आर्थिक आवश्यकताएँ हैं। ऊर्जा सुरक्षा, औद्योगिक विकास और तकनीकी आत्मनिर्भरता भारत की प्राथमिकताएँ रही हैं। आर्थिक प्रतिबंधों के कारण इन आवश्यकताओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है, जिसे भारत टालने का प्रयास करता है। इस संदर्भ में भारत की नीति को अवसरवाद के रूप में नहीं, बल्कि यथार्थवादी विवेक के रूप में देखा जाना चाहिए। भारत यह सुनिश्चित करना चाहता है कि उसकी विदेश नीति विकासात्मक लक्ष्यों के अनुरूप बनी रहे।

### 4. आर्थिक प्रतिबंधों के संदर्भ में भारत की विदेश नीति का आलोचनात्मक विश्लेषण

भारत की संतुलनकारी विदेश नीति को केवल व्यावहारिक कूटनीति के रूप में देखना अपर्याप्त होगा। यह नीति वस्तुतः वैश्विक शक्ति-संतुलन, आर्थिक यथार्थ और नैतिक दावों के बीच एक जटिल समन्वय का परिणाम है। आर्थिक प्रतिबंधों के संदर्भ

में भारत की नीति न तो पूर्णतः यथार्थवादी कठोरता को दर्शाती है और न ही आदर्शवादी नैतिकतावाद को। आलोचनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो भारत की यह नीति तीन स्तरों पर कार्य करती है: पहला, राष्ट्रीय हितों की रक्षा; दूसरा, अंतरराष्ट्रीय वैधता और बहुपक्षीयता का समर्थन; तीसरा, विकासशील देशों के प्रति नैतिक उत्तरदायित्व। इन तीनों स्तरों के बीच संतुलन साधना भारत की विदेश नीति की सबसे बड़ी चुनौती भी है और उसकी विशिष्टता भी।

#### 4.1 भारत की नीति की सीमाएँ और विरोधाभास

यद्यपि भारत की संतुलनकारी नीति को परिपक्व और विवेकपूर्ण माना जाता है, तथापि इसमें कुछ अंतर्निहित सीमाएँ भी दृष्टिगोचर होती हैं। एक ओर भारत एकतरफा आर्थिक प्रतिबंधों का विरोध करता है, वहीं दूसरी ओर वह वैश्विक वित्तीय संस्थाओं और व्यवस्थाओं का सक्रिय भागीदार भी है, जो कई बार इन्हीं प्रतिबंधों को अप्रत्यक्ष रूप से सुदृढ़ करती हैं। इसके अतिरिक्त, भारत की नीति को कभी-कभी अस्पष्ट (ambiguous) भी कहा गया है। आलोचकों का तर्क है कि स्पष्ट समर्थन या विरोध के अभाव में भारत की स्थिति नैतिक नेतृत्व के दावे को कमजोर कर सकती है। हालांकि, इस आलोचना का प्रतिवाद यह है कि अस्पष्टता नहीं, बल्कि रणनीतिक लचीलापन भारत की नीति का मूल तत्व है।

#### 4.2 भारत और वैश्विक दक्षिण

भारत की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम वैश्विक दक्षिण के साथ उसकी पहचान है। आर्थिक प्रतिबंधों का प्रभाव विकासशील देशों पर अपेक्षाकृत अधिक पड़ता है, क्योंकि उनकी अर्थव्यवस्थाएँ सीमित संसाधनों और बाह्य निर्भरता पर आधारित होती हैं। भारत ने इस असमान प्रभाव को अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बार-बार रेखांकित किया है। वैश्विक दक्षिण के संदर्भ में भारत स्वयं को केवल एक राष्ट्र के रूप में नहीं, बल्कि एक प्रतिनिधि आवाज़ के रूप में प्रस्तुत करता है। आर्थिक प्रतिबंधों के विरुद्ध भारत का संतुलित रुख विकासशील देशों के लिए यह संकेत देता है कि वैश्विक राजनीति में वैकल्पिक दृष्टिकोण भी संभव हैं, जो न तो पूर्ण समर्पण पर आधारित हों और न ही टकराव पर।

#### 4.3 बहुपक्षीयता बनाम शक्ति-आधारित व्यवस्था

आर्थिक प्रतिबंधों की राजनीति ने बहुपक्षीयता की अवधारणा को गंभीर चुनौती दी है। जब प्रतिबंध अंतरराष्ट्रीय सहमति के बिना लगाए जाते हैं, तो वे नियम-आधारित व्यवस्था को कमजोर करते हैं। भारत की विदेश नीति इस संदर्भ में बहुपक्षीयता को पुनर्स्थापित करने का प्रयास करती है। भारत का यह दृष्टिकोण इस धारणा पर आधारित है कि वैश्विक समस्याओं का समाधान सामूहिक प्रयासों से ही संभव है। आर्थिक प्रतिबंधों के स्थान पर संवाद, सहयोग और संस्थागत सुधारों पर बल देना भारत की नीति को नैतिक और व्यावहारिक दोनों स्तरों पर सुदृढ़ बनाता है।

#### 4.4 क्या भारत की नीति दीर्घकालिक रूप से प्रभावी है?

यह प्रश्न अकादमिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है कि क्या भारत की संतुलनकारी नीति दीर्घकालिक रूप से प्रभावी सिद्ध होगी। बदलते वैश्विक शक्ति-संतुलन में दबाव की राजनीति और आर्थिक राष्ट्रवाद के बढ़ते प्रभाव के बीच संतुलन बनाए रखना सरल नहीं है। फिर भी, यह तर्क दिया जा सकता है कि भारत की नीति उसे अत्यधिक ध्रुवीकरण से बचाती है। यह नीति भारत को विभिन्न शक्ति केंद्रों के साथ संवाद बनाए रखने की क्षमता प्रदान करती है, जो दीर्घकाल में उसकी कूटनीतिक और आर्थिक स्वायत्तता को सुदृढ़ कर सकती है।

## निष्कर्ष

यह शोध-पत्र इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि आर्थिक प्रतिबंध समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति में केवल नीति-निर्देशन का साधन नहीं रह गए हैं, बल्कि वे वैश्विक शक्ति-संरचना के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में कार्य कर रहे हैं। प्रतिबंधों के माध्यम से राज्यों के आर्थिक व्यवहार, कूटनीतिक विकल्पों और रणनीतिक स्वतंत्रता को प्रभावित किया जाता है, जिससे अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति अधिक जटिल और असमान होती जा रही है। इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आर्थिक प्रतिबंधों की प्रभावशीलता सार्वभौमिक नहीं है, बल्कि वह अंतरराष्ट्रीय संदर्भ, लक्षित राज्य की संरचनात्मक क्षमता तथा वैश्विक समर्थन के स्तर पर निर्भर करती है। शोध में यह भी रेखांकित किया गया है कि आर्थिक प्रतिबंधों के सामाजिक और आर्थिक परिणाम प्रायः असंतुलित होते हैं। यद्यपि इन्हें अंतरराष्ट्रीय कानून और वैश्विक नैतिकता के नाम पर लागू किया जाता है, तथापि इनके दुष्प्रभाव सामान्य जनसंख्या, विशेषकर विकासशील देशों के कमजोर वर्गों पर अधिक पड़ते हैं। इस कारण प्रतिबंधों की वैधता और नैतिक आधार पर गंभीर प्रश्न उठते हैं, जो वैश्विक शासन व्यवस्था की निष्पक्षता को चुनौती देते हैं। भारत की विदेश नीति के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उसने आर्थिक प्रतिबंधों के प्रति एक ऐसी संतुलनकारी रणनीति अपनाई है, जो न तो किसी एक शक्ति-गुट के पूर्ण संरक्षण पर आधारित है और न ही वैश्विक राजनीति से विमुखता पर। भारत की नीति रणनीतिक स्वायत्तता, राष्ट्रीय हितों और बहुपक्षीय सहयोग के सिद्धांतों के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास है। यह दृष्टिकोण भारत को बदलते वैश्विक शक्ति-संतुलन में लचीलापन प्रदान करता है तथा उसे विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय और प्रासंगिक बनाए रखता है। अंततः यह अध्ययन इस निष्कर्ष को प्रस्तुत करता है कि आर्थिक प्रतिबंधों की वैश्विक राजनीति में भारत की भूमिका एक प्रतिक्रियात्मक अभिनेता की नहीं, बल्कि एक विवेकशील और उत्तरदायी वैश्विक भागीदार की है। भारत द्वारा अपनाई गई संतुलनकारी विदेश नीति न केवल उसके विकासात्मक लक्ष्यों की रक्षा करती है, बल्कि वह बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था में संवाद, सहयोग और संस्थागत सुधारों पर आधारित एक वैकल्पिक मार्ग भी प्रस्तावित करती है। इस प्रकार, यह शोध यह स्थापित करता है कि आर्थिक प्रतिबंधों के वर्तमान युग में भारत की विदेश नीति वैश्विक स्थिरता और अधिक समावेशी अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है।

## संदर्भ सूची

1. Baldwin DA. (1985). *Economic Statecraft*. Princeton University Press. आर्थिक प्रतिबंध और आर्थिक शक्ति पर सबसे मानक पुस्तक।
2. Baylis J, Smith S, Owens P. (2020). *The Globalization of World Politics: An Introduction to International Relations*. Oxford University Press. वैश्विक राजनीति और शक्ति-राजनीति का क्लासिक स्रोत।
3. Hufbauer GC, Schott JJ, Elliott KA, Oegg B. (2007). *Economic Sanctions Reconsidered*. Peterson Institute for International Economics. आर्थिक प्रतिबंधों की प्रभावशीलता पर प्रमुख अध्ययन।
4. Drezner DW. (2011). *Sanctions Sometimes Smart: Targeted Sanctions in Theory and Practice*. *International Studies Review*, 13(1), 96-108. लक्षित प्रतिबंधों की अकादमिक समीक्षा।
5. United Nations Security Council- *Sanctions and International Peace and Security – Official Reports*. बहुपक्षीय प्रतिबंधों के लिए प्रामाणिक स्रोत।

6. Narlikar A. (2014). *India's Role in Global Governance*-Oxford University Press. भारत की वैश्विक भूमिका और नीति-निर्माण पर मान्य पुस्तक।
7. Pant HV. (2019). *Indian Foreign Policy in a Unipolar World*. Routledge. भारत की रणनीतिक स्वायत्तता पर विश्वसनीय अध्ययन।
8. Mohan C Raja. (2015). *India and the Balance of Power*. Brookings Institution Press. भारत की संतुलनकारी विदेश नीति का विश्लेषण।
9. Acharya A. (2018). *The End of American World Order- Polity Press*. बहुध्रुवीय विश्व और वैश्विक शक्ति परिवर्तन की व्याख्या।
10. Ministry of External Affairs, Government of India.
11. *Annual Reports on Foreign Policy*. भारत की आधिकारिक विदेश नीति के लिए प्रामाणिक सरकारी स्रोत।
12. *United Nations Reports on Sanctions and International Peace*.
13. भारतीय विदेश नीति पर प्रकाशित अकादमिक जर्नल लेख।
14. वैश्विक राजनीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों की मानक पाठ्य-पुस्तकें।
15. देश के प्रमुख समाचार पत्रों की हाल के सम्पादकीय लेख।